पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

।। ओ३म् ।।

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

आर्य मनीषी, वीर बलिदानी

पं. लेखराम जी

के बलिदान दिवस (6 मार्च) पर शत् शत् नमन

❖❖❖

-दास राम आर्य

51, सैक्टर-16, फरीदाबाद

वर्ष-28 अंक-19 चैत्र-2068 दयानन्दाब्द 189 1 मार्च से 15 मार्च 2012 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान में ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

देश में मुस्लिम वोटों का ध्रुवीकरण एक नये बंटवारे को जन्म देगा

-आर्य नेता डॉ. अनिल आर्य का आह्वान

डी.ए.वी. स्कूल यूसफ सराय, नई दिल्ली में बायें से डॉ. अनिल आर्य, श्रीमती कृष्णा व श्री विद्यामित्र ठुकराल व यज्ञ करते यज्ञमान। द्वितीय चित्र में प्राचार्य श्री श्याम लाल आर्य को सम्मानित करते बायें से डॉ. जे.पी. गुप्ता, श्री चतरसिंह नागर, श्री जितेन्द्र डावर, डॉ. अनिल आर्य व श्री महावीर सिंह आर्य।

नई दिल्ली। रविवार, 26 फरवरी 2012, दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान में डी.ए.वी. सीनियर सैकेण्डरी स्कूल यूसफ सराय में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव व बोधोत्सव का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री मोहन लाल चोपड़ा ने की व मुख्य अतिथि श्री विधामित्र ठुकराल थे। ओ३म् ध्वज का आरोहण पं. खेमचन्द्र शर्मा ने किया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने कहा कि वर्तमान चुनावों के दौरान देखने को आ रहा है कि विभिन्न राजनैतिक दल मुस्लिम वोटों के ध्रुवीकरण व उन्हें पाने के लिए चुनाव आयोग की परवाह न करते हुए उनके लाभ की घोषणायें कर रहे है। यह आचार संहिता व भारतीय संविधान की मूल भावना का खुला उल्लंघन है। आज 83 प्रतिशत हिन्दुओं के वोट का एक ध्रुवीकरण न होने के कारण हिन्दू ठगा सा महसूस कर रहा है। अनेक ऐसी सीटें बन चुकी है जहां मुस्लिम मत निर्णायक सिद्ध होंगे, यह वास्तव में देश की एकता और अखण्डता के लिए एक चुनौती है जो आने वाले समय में 1947 की तरह देश विभाजन की भूमिका तैयार करने में निर्णायक सिद्ध होंगे। हमें देश की एकता-अखण्डता को अक्षुण बनाये रखने के लिए हिन्दू संख्या बल बढ़ाना एवं 83 प्रतिशत हिन्दू वोट बैंक का एकत्रीकरण, ध्रुवीकरण व 100 प्रतिशत मतदान निश्चित करना ही होगा, अन्यथा कमजोर व असंगठित लोगों की दुनियां में कोई कीमत नहीं होती। युग का इतिहास बहादुर व संगठित लोग ही रचा करते है।

विशिष्ट अतिथियों में प्रि. राधाकृष्ण ठाकुर, श्रीमती मीना ठाकुर, डॉ. महेश विद्यालंकार, श्री जितेन्द्र डावर (मण्डल प्रधान), श्री बी.पी. गुप्ता, डॉ. पूर्ण सिंह डबास, श्री हरबंसलाल कोहली, श्री विजय गुप्त, प्रि. अर्चना पुष्करना, श्री ओमवीर सिंह आदि विद्यमान थे। कुशल संचालन श्री चतरसिंह नागर महामंत्री ने किया।

महर्षि दयानन्द बोध दिवस सौल्लास सम्पन्न

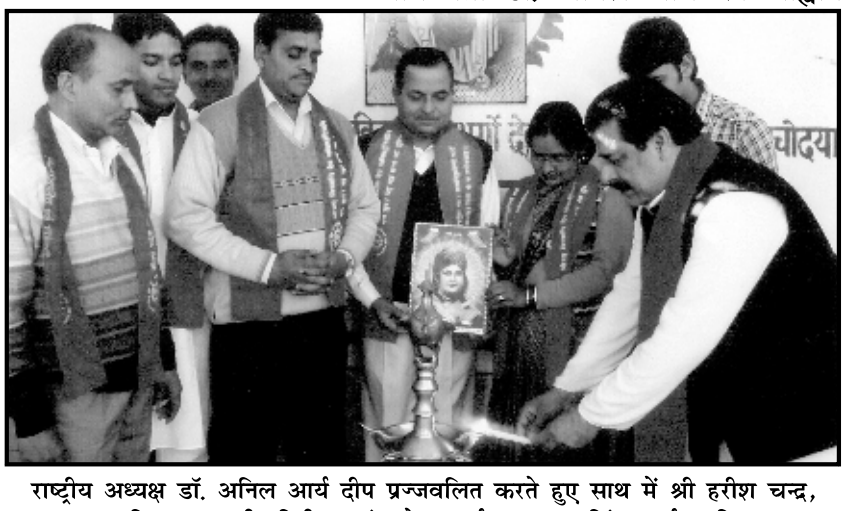

महर्षि दयानन्द ने वैचारिक क्रान्ति का शंखनाद किया

-आर्य नेता डॉ. अनिल आर्य का आह्वान

राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य दीप प्रज्जवलित करते हुए साथ में श्री हरीश चन्द, अनिरूद्ध शास्त्री, गिरीश, शंकरदेव आर्य, रामचन्द्र सिंह आर्य आदि

नई दिल्ली। रविवार 19 फरवरी 2012, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में शिवरात्री पर्व आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली में सौल्लास मनाया गया। आर्य जनों ने महर्षि दयानन्द के आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने वैचारिक क्रान्ति का शंखनाद किया और उनके विचारों ने पूरे विश्व को झंझोर कर समाज को नयी दिशा प्रदान की। आज स्वामी दयानन्द जी के विचारों पर चल कर ही विश्व में सच्ची शान्ति स्थापित हो सकती है। परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री आचार्य महेन्द्र भाई ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने पहले स्वयं जग कर फिर पूरे राष्ट्र को जगाया।

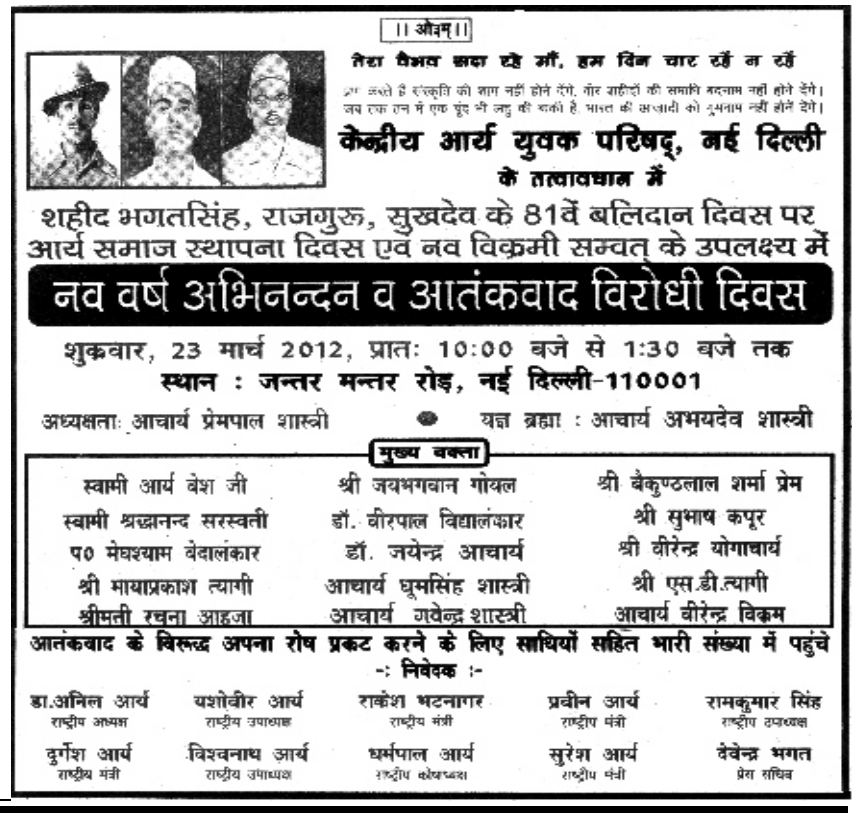

।। ओ३म् ।।

तेरा वैभव सदा रहे माँ, हम दिन चार रहें न रहें

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली

के तत्वावधान में

शहीद भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव के 81वें बलिदान दिवस पर आर्य समाज स्थापना दिवस एवं नव विक्रमी सम्वत् के उपलक्ष्य में

नव वर्ष अभिनन्दन व आतंकवाद विरोधी दिवस

शुक्रवार, 23 मार्च 2012, प्रातः 10:00 बजे से 1:30 बजे तक

स्थान : जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली-110001

अध्यक्षता: आचार्य प्रेमपाल शास्त्री ● यज्ञ ब्रह्मा : आचार्य अभयदेव शास्त्री

मुख्य वक्ता

स्वामी आर्य वेश जी	श्री जयभगवान गोयल	श्री वैकुण्ठलाल शर्मा प्रेम
स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती	डॉ. वीरपाल विद्यालंकार	श्री सुभाष कपूर
प० मेघश्याम वेदालंकार	डॉ. जयेन्द्र आचार्य	श्री वीरेन्द्र योगाचार्य
श्री मायाप्रकाश त्यागी	आचार्य धूमसिंह शास्त्री	श्री एस.डी.त्यागी
श्रीमती रचना आहूजा	आचार्य गवेन्द्र शास्त्री	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम

आतंकवाद के विरूद्ध अपना रोष प्रकट करने के लिए साथियों सहित भारी संख्या में पहुंचे

-: निवेदक :-

डा.अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष	यशोवीर आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राकेश भटनागर राष्ट्रीय मंत्री	प्रवीन आर्य राष्ट्रीय मंत्री	रामकुमार सिंह राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
दुर्गेश आर्य राष्ट्रीय मंत्री	विश्वनाथ आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	धर्मपाल आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	सुरेश आर्य राष्ट्रीय मंत्री	देवेन्द्र भगत प्रेस सचिव

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में महर्षि दयानन्द का योगदान

–नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम को तन के गोरे मन के काले अंग्रेज इतिहासकारों ने गदर या विद्रोह का नाम दिया। अंग्रेज इतिहासकारों की इस हरकत से उनकी मानसिकता स्पष्ट हो जाती है। परन्तु शायद वर्षों तक गुलाम रहने के कारण गुलामी की मानसिकता में जी रहे आजाद भारतीय हुकमरानों ने भी इसे गदर या विद्रोह ही माना। अपने गौरवशाली इतिहास को आने वाली पीढ़ियों के समक्ष रखना जिसे जानकर हमारी वर्तमान पीढ़ी स्वयं को गौरवान्वित महसूस करे और उसी गौरवशाली इतिहास की पृष्ठभूमि में वर्तमान में संघर्ष करते हुए अपने भविष्य को उज्जवल एवं सुरक्षित कर सके। वेदों के पुनर्स्थापक एवं आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द की भूमिका 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समय अत्यंत महत्वपूर्ण रही। हालांकि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्वलिखित जीवनी इतिहास के इस मोड़ पर आकर मौन धारण कर लेती है। शायद इसका कारण भी स्वतंत्रता संग्राम के समय आवश्यक रूप से अपनाई जाने वाली कूटनीति रही होगी। उपलब्ध प्रमाणिक ऐतिहासिक ग्रन्थों, प्रमाणों, श्रुति परंपराओं व स्वामी दयानन्द द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश यजुर्वेदभाष्य भूमिका, आर्याभिविनय आदि में व्यक्त विचारों के आधार पर हम बड़ी आसानी से प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 के समय देव दयानन्द की भूमिका समझ सकते हैं।

(1) वर्ष 1855 में महर्षि दयानन्द हिमालय यात्रा के समय शंकराचार्य द्वारा स्थापित जोशी मठ में गए जहां उन्हें मठ के विद्वान महन्त ने स्वामी पूर्णानन्द जी से शिक्षा ग्रहण करने की प्रेरणा देते हुए उनके नाम एक पत्र दिया। शिक्षा पाने को आतुर दयानन्द गंगा किनारे भ्रमण करते हुए स्वामी पूर्णानन्द जी से मिले। परन्तु स्वामी पूर्णानन्द जी ने अपनी वृद्धावस्था 110 वर्ष से अधिक आयु का हवाला देते हुए पढ़ाने में असमर्थता जाहिर की और उन्हें मथुरा में अपने शिष्य विरजानन्द दण्डी के पास जाने की प्रेरणा दी। यह घटना 1855 की है। परन्तु महर्षि दयानन्द स्वामी विरजानंद के पास वर्ष 1860 में पहुंचे। ज्ञान पिपासु शिक्षा दीक्षा पाने को आतुर सच्चे शिव की खोज में निकले स्वामी दयानन्द इन पांच वर्षों तक मथुरा में गुरु विरजानन्द के पास नहीं पहुंच पाए तो इसका एकमात्र कारण 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में उनकी महती भूमिका रही। इन पांच वर्षों में स्वामी दयानन्द प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की योजना बनाते, प्रेरणा देते तथा जनसाधारण में जागृति का स्वतंत्रता का मंत्र फूंकते घूमते रहे।

(2) महर्षि दयानन्द नाना साहब पेशवा के गुरु थे। नाना साहब को स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणा महर्षि दयानन्द ने दी। इतिहासकार तो यह भी लिखते हैं कि नाना साहब ने शास्त्र का आश्रय लेकर प्रथम स्वतंत्रता संग्राम लड़ा तो यही कार्य उनके प्रेरक महर्षि दयानन्द ने शास्त्र का आश्रय लेकर किया। नाना साहब पर स्वामी दयानन्द के प्रभाव की पुष्टि प्रथम स्वाधीनता संग्राम के उपरांत तीनों स्वतंत्रता सेनानियों नाना साहब, दुर्जन राव व उनके सेनापति तात्या टोपे को उपदेश दिया तथा नाना साहब को संन्यास देकर उनका नाम दिव्यानन्द सरस्वती रख दिया, इस तथ्य से होती है।

(3) 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समय महर्षि दयानन्द सेनानियों व उनके नेताओं के बीच संपर्क सूत्र, प्रेरक, योजनाकार के रूप में कार्य करते रहे। उदाहरण के लिए नाना साहब को सुरक्षित रखने के लिए मौरवी के सामंत के नाम पत्र महर्षि दयानन्द ने ही लिखकर भेजा था। नाना साहब का मौरवी में साधुवेश में निवास तथा देहान्त प्रसिद्ध है।

(4) वर्ष 1856 में एक सर्वखाप पंचायत स्वतंत्रता संग्राम की योजना को अन्तिम रूप देने के लिए मथुरा के तीर्थगाह पर हुई जिसमें नाना साहब पेशवा, मौलवी अजीम उल्लाखान, रंगुबाबू आदि कई स्वतंत्रता सेनानियों ने सर्वखाप पंचायत के नुमांइदों के साथ भाग लिया। इस अपुष्ट एतिहासिक पंचायत की पुष्टि मीर मुश्ताक मीरासी के स्वलिखित उर्दू, फारसी लिपि के पत्र से ही होती हैं

(5) 1857 के स्वतंत्रता युद्ध में उत्तर और दक्षिण के बीच राजाओं, जागीरदारों व स्वतंत्रता सेनानियों के संपर्क सूत्र के रूप में कार्य करने की पुष्टि अंग्रेज सरकार द्वारा नियुक्त मेचर एच.पी. देवरा तथा कैप्टन जे.एल. पीयर्स के कमीशन के सामने सीताराम बाबा की गवाही से भी होती है। जिन्होंने दस्सा बाबा और उनके शिष्य दीनदयाल जोकि नाना साहब के गुरु थे द्वारा योजनायें बनाने तथा संपर्क सूत्र के रूप में कार्य करने की पुष्टि की हे। दस्सा बाबा स्वामी पूर्णानन्द व उनका शिष्य दीनदयाल स्वामी दयानन्द ही थे। स्वतंत्रता संग्राम 1857 में देव दयानन्द की महत्वपूर्ण भूमिका योजनाकार के रूप में प्रेरक एवं संपर्क सूत्र के रूप में या फिर शास्त्र को लेकर यह संग्राम लड़ने की रही। इस बात की पुष्टि में स्वामी दयानन्द द्वारा रचित अमर क्रान्तिकारी ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश, आर्याभिविनय, यजुर्वेदभाष्य तथा विभिन्न स्थानों पर दिए प्रेरक प्रवचनों से होती है कि स्वामी दयानन्द के हृदय में विदेशी आक्रान्ताओं के साम्राज्य को उखाड़ फैकने तथा स्वदेशी राज्य स्थापित करने की कितनी तीव्र उत्कंठा मन में थी। उदाहरण...

''कोई कितना भी करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है।'' –सत्यार्थप्रकाश 8वां समुल्लास

''विदेशियों के आर्यावर्त में राजा होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना-पढ़ाना, बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विष्यासक्ति, मिथ्याभाषणादि कुलक्षण, वेद-विद्या का अप्रचारादि कर्म हैं, जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं, तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।'' –सत्यार्थ प्रकाश 10वां समुल्लास

''जब सम्वत् 1914 के वर्ष में तोपों से मन्दिर, मूर्तियां अंग्रेजो ने उड़ा दी थी तब मूर्ति कहां गई थी? प्रत्युत बाघेर लोगों ने जितनी वीरता दिखाई और लड़े शत्रुओं को मारा परन्तु मूर्ति एक मक्खी की टांग भी न तोड़ सकी। जो श्रीकृष्ण के सदृश कोई होता तो उनके धुर्रे उड़ा देता और ये भागते फिरते।'' –सत्यार्थ प्रकाश 11वां समुल्लास

''महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने वेदभाष्य में लिखते है... क्षत्राय पिन्वस्व हे महाराधिराज ब्रह्मण! अखण्ड चक्रवर्ती राज्य के लिए शौर्य, धैर्य, नीति, विनय, पराक्रम और बलादि उत्तमगुणयुक्त कृपा से हम लोगों को यथावत् पुष्टकर अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी न हों तथा लोग पराधीन कभी न हो। –यजुर्वेद अध्याय 38 मंत्र 14 भाष्य

''हे महाधनेश्वर! हमारे शत्रुओं के बल, पराक्रम को आप सर्वथा नष्ट करें। आपकी करूणा से हमारा राज्य और धन सदा वृद्धि को प्राप्त हो।'' –आर्याभिविनय-43

''राजन, मैं तो प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर अपने परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना करता हूं कि शीघ्रातिशीघ्र यह राज्य भारत से उठ जाये, मैं तो शीघ्र ही वह दिन देखना चाहता हूं कि जब भारत का शासन सूत्र हम भारतवासियों के हाथ में हो। महर्षि के इस निर्भयता तथा, वीरतापूर्ण तथा अप्रत्याशित उत्तर से वायसराय चकित हो गया, इण्डिया ऑफिस को भेजे गये अपने दस्तावेजों में उसने लिखा कि इस विद्रोही फकीर पर कड़ी नजर रखी जाये।'' –दैनिक वीर अर्जुन दिल्ली 9.4.1961 के अंक में दीवान अलखधारी जी का लेख

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रकट किए गए इन विचारों से प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका की पुष्टि होती है। स्वामी जी के जीवन उनके प्रवचनों रचित ग्रन्थों से प्रेरणा पाकर ही देश की आजादी के आन्दोलन में कूदने वाले 80 प्रतिशत आर्यसमाजी ही थे।

–502/जीएच/27 सैक्टर-20, पंचकूला मो. 9467608686

रावण लीला पर सर्वोच्च न्यायालय का विचित्र फैसला

–डॉ. वेदप्रताप वैदिक

24 फरवरी 2012 रामलीला मैदान में हुई रावण-लीला पर सर्वोच्च न्यायालय ने जो निर्णय दिया है, वह अपने आप में विचित्र है। सबसे पहले तो सर्वोच्च न्यायालय की सराहना करती होगी कि उसने आगे होकर इस रावणलीला को मुकदमें का विषय बनाया। लेकिन छः माह तक खोदा पहाड़ और उसमें से निकाला क्या? निकाला यह कि चार जून को बर्बरतापूर्ण कार्रवाई के लिए सिर्फ दिल्ली पुलिस जिम्मेदार है। क्या अदालत को यह पता नहीं कि दिल्ली पुलिस भारत के गृह मंत्रालय के अंर्तगत है? रामलीला मैदान में आयोजित अनशन पर क्या किसी गली कूचे में चोरी चकारी का मामला था, जिसे पुलिस खुद अपने बूते हल कर सकती थी? जिस मामले को सुलझाने के लिए चार-चार मंत्री हवाई अड्डे दौड़ गए हो, क्या दिल्ली पुलिस उसके बारे में अपने आप फैसला कर सकती थी? आश्चर्य है कि अदालत ने पुलिस को तो रावणलीला के लिए जिम्मेदार ठहरा दिया लेकिन उसके राजनीतिक आकाओं के खिलाफ एक शब्द भी नहीं बोला। गरीब की जोरू सब की भाभी। अदालत के सम्मान की रक्षा तो तब होती जब वह असली अपराधियों पर उंगली धरती। अदालत ने यह अच्छा किया कि दिवंगत राजबाला समेत अन्य घायलों को मुआवजा देने की बात कही, लेकिन 75 प्रतिशत मुआवजा सरकार दे, यह कहा। सरकार के पास किसका पैसा है? हमारा है। हमारी जूती हमारे ही सर। मुआवजे का पैसा तो उन राजनीतिक आकाओं से वसूल करना चाहिए, जिन्होंने 4 जून को रामलीला मैदान में गुंडागर्दी करवाई। रामदेव से 25 प्रतिशत मुआवजा देने की बात कहना ऐसा ही है, जैसे कार चोर से 75 प्रतिशत और कार मालिक से 25 प्रतिशत कीमत वसूल करना है। मालिक का दोष यह है कि उसने कार को जंजीरों से बांधकर क्यों नहीं रखा? क्या खूब न्याय है?

यह फैसला यह मानकर चल रहा है कि भारत लोकतंत्र नहीं है, एक पोलिस स्टेट है। यहां प्रधानमंत्री, गृहमंत्री और मंत्रालयों की कोई हैसियत नहीं हैं। गंभीरतम फैसले पुलिस खुद कर लेती है। यदि सर्वोच्च न्यायालय अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा करना चाहता है तो उसे इस फैसले पर तुरंत पुर्नविचार करना चाहिए। यह फैसला बताता है कि इन विद्वान जजों को भारतीय परंपराओं का ज्ञान ठीक से नहीं है।

आर्य समाज पश्चिम विहार में भजन संध्या सम्पन्न

पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान में ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में शनिवार दिनांक 25 फरवरी 2012 को श्री नरेन्द्र आर्य सुमन व पं. कंचन कुमार की मधुर संगीत संध्या आर्य समाज पश्चिम विहार, दिल्ली में सौल्लास सम्पन्न हुई। समाज के मंत्री श्री राजेन्द्र लाम्बा का भव्य अभिनन्दन किया गया। समारोह का संचालन आचार्य इन्द्रदेव ने किया। इस अवसर पर आर्य नेता श्री हीरालाल चावला, श्री मदन मोहन सलूजा, श्री रवि चड्डा, श्री जगदीश नागिया, श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा आदि भी उपस्थित थे।

कोहाट एनक्लेव में भजन संध्या सम्पन्न

वेद प्रचार मण्डल उत्तर पश्चिमी दिल्ली के तत्वावधान में रविवार दिनांक 26 फरवरी 2012 को श्री कंचन कुमार की भजन संध्या महर्षि दयानन्द पार्क कोहाट एनक्लेव पीतमपुरा दिल्ली में सौल्लास सम्पन्न हुई। डॉ. महेश विद्यालंकार का प्रवचन हुआ। मण्डल के प्रधान श्री सुरेन्द्र गुप्ता, महामंत्री श्री जोगेन्द्र खट्टर के पुरुषार्थ से कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। **–दुर्गेश आर्य**

श्रद्धांजलि देने का वैदिक ढंग इस प्रकार हो सकता है

–इन्द्रदेव गुलाटी

मैं 2007 ई. में स्थानीय आर्य समाज के 3 पदाधिकारियों के साथ डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज के प्रधानाचार्य डा. सी.पी. गुप्ता से मिलने 1 जून को गया था क्योंकि उस दिन डी.ए.वी. का स्थापना दिवस था। उनसे कार्यालय में भेंट –परिचय एवं वार्ता हुई। उसी कार्यालय में महर्षि दयानन्द सरस्वती का बड़ा फोटो शीशे में मडा हुआ टंगा था जिस पर दानों की माला पहनाई हुई थी। माला को देखकर आश्चर्य सा हुआ।

मैंने डॉ. गुप्ता से विनम्रता पूर्वक कहा कि महर्षि दयानन्द के फोटो पर फूलमाला या दानों की माला नहीं पहनाई जानी चाहिए क्योंकि वे मूर्ति पूजक नहीं थे बल्कि उन्होंने मूर्ति पूजा का डटकर विरोध किया था और उसे वेदों के विरुद्ध सिद्ध किया था। अत: कृपया दानों की माला को उतार दें।

डॉ. गुप्ता ने उत्तर दिया कि उनका परिवार भी आर्य समाजी है किन्तु उन्हें तब तक मालूम नहीं था कि वैदिक धर्मानुसार माला पहनानी वर्जित है अत: यह माला अज्ञानता के कारण पहना दी गई है और अब ज्ञान हो गया है अत: इसे उतार देंगे। उनका उत्तर सन्तोष जनक था और हम उत्तर से सन्तुष्ट हो रहे थे।

मेरे साथ गए आर्य समाज बुलन्दशहर के तत्कालीन वरिष्ठ उप प्रधान निर्गुण आर्य ने बीच का रास्ता निकालते हुए कहा कि माला लगी रहने दी जाए किन्तु चित्र की पूजा नहीं होनी चाहिए और धूपबत्ती या अगरबत्ती चित्र के आगे नहीं जलानी चाहिए। यदि वे ऐसा न कहते तो अच्छा होता। उन्हें कहना चाहिए था कि मैं गायत्री मंत्र का उच्चारण कर रहा हूं और आप माला हमारे सामने ही हटा दें। उतार दें तो बहुत अच्छा होता। यदि आर्य विद्वान माला पहनाने पर सहमति व्यक्त करते हैं तो मेरे विचार से यह कतई ठीक नहीं है क्योंकि इससे आर्य समाज वैदिक धर्म की अलग पृथक पहचान कैसे बनेगी? मूर्ति पूजा और निराकार की उपासना का अन्तर स्पष्ट रूप से दिखाई देना चाहिए अन्यथा भ्रम की स्थिति बनती रहेगी।

डॉ. अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर ने लिखा है ''कि चित्र पर किसी भी रूप में फल चढ़ाना या माला पहनाना भी इसी प्रकार पूजा कही जा सकती है जिस पर अगरबत्ती या धूप देने से।

अत: वैदिक मान्यता को सदा याद रखो कि चित्र में दर्शाए चित्र वाले व्यक्ति के चरित्र को याद रखो, उससे प्रेरणा लो। इसके अतिरिक्त चित्र का कोई महत्व नहीं है।

इस पर धूप दीप करना, माला पुष्प चढ़ाना वैदिक मान्यताओं का घोर विरोध है। इससे सदा बच कर रहो। अन्यथा मूर्तिक पूजकों में और आर्यों/वैदिक धर्मियों में कोई अन्तर ही नहीं रहेगा।

2010 में 1 जून को प्राचार्या जी से कार्यालय में भेंटवार्ता में मैंने पूछा कि महर्षि दयानन्द का फोटो दिखाई नहीं दे रहा है तो उत्तर मिला कि उसमें दीमक लग गई थी अत: उसे स्टोर में रखवा दिया गया है। उन्होंने वातायन स्मारिका मुझे पढ़ने के लिए भेंट में दी। इसमें वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना की जगह सरस्वती वन्दना लिखी हुई थी और ओ३म् को सनातन धर्म की पद्धति से लिखा हुआ था। मैंने कुछ और सुझाव लिखकर दिए ताकि अगली पत्रिका में आर्य समाज की झलक देखने को मिले। प्राचार्या ने सुझावों को पढ़ा और उन्हें अगली पत्रिका में लिखने का आश्वासन दिया।

2011 में 1 जून को कार्यवाहक प्राचार्य से भेंट की और उन्हें डी.ए.वी. से सम्बन्धित मुख्य-मुख्य जानकारियां दी। कार्यालय में स्वामी विवेकानन्द, डॉ. अम्बेडकर, चन्द्रशेखर आजाद, डॉ. सी.पी. गुप्ता के फोटो लगे थे। कुछ पर फूलमालाएं चढ़ी हुई थी। दयानन्द जी तथा महात्मा हंसराज के चित्र न होने पर उत्तर मिला कि वे तो कार्यवाहक हैं अत: स्थायी प्राचार्य आने वाले हैं तब उनसे कहा जाए।

आर्य विद्या सभा के अध्यक्ष ने आश्वासन दिया कि कॉलेज में दयानन्द व हंसराज के फोटो लगवा दिए जाएगें क्योंकि अनुरोध उचित है अत: वह पूरा किया जाएगा।

इसी कॉलेज के पूर्व प्राचार्य प्रतिवर्ष सुभाष जयन्ती पर उनकी प्रतिमा पर सनातन धर्म की पद्धति से माल्यार्पण करते रहे। यदि वे वैदिक धर्मी होते तो प्रतिमा पर जाकर वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना का उच्चारण करके आजाद हिन्द फौज या सुभाष समर्थक संगठन के प्रमुख को पुष्पमाला पहनाया करते।

पिछले 136 वर्षों में आर्य समाज के नेता, विद्वान, बुद्धिजीवी, पुरोहित किसी वैदिक धर्मी पद्धति से श्रद्धांजलि देने का ढंग प्रस्तुत नहीं कर सके अत: उस कमी को पूरा करने के लिए श्रद्धाजंलि देने का वैदिक ढंग लिखा है। जिसे अपनाया जाए ताकि यह ढंग लोकप्रिय हो। इससे आर्य समाज की अलग पहचान बनेगी और उसका विस्तार होगा।

–18/186, टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर

आर्य कन्या गुरुकुल, शास्त्री नगर, लुधियाना (पंजाब)
दूरभाष-0161-2459563
(पंजाब का एकमात्र कन्या गुरुकुल)

प्रवेश सूचना-सत्र 2012-2013

छठी कक्षा (आयु+9 से -11 वर्ष) एवं सातवीं कक्षा (आयु +10 से -12 वर्ष) में कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण-पत्र (मूल्य केवल 100/-रुपए) भरकर 31.3.0212 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं। (पंजीकरण-पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते है) –कन्याओं की लिखित प्रवेश परीक्षा 01 अप्रैल, 2012 दिन रविवार को प्रात: 9.00 बजे होगी। –सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

–सत्यानन्द मुंजाल, कुलपति

स्वामी दयानन्द का जीवन दर्शन

–श्री देवराज आर्यमित्र

1. एक व्यक्ति ने स्वामी जी से कहा महाराज स्वांग ड्रामों में सारी रात नींद नहीं आती परन्तु सत्संग में नींद आने लगती है। तब स्वामी जी ने उत्तर दिया नृत्य गाने कांटों का बिछौना है और सत्संग फूलों की शैय्या है फिर नींद क्यों नहीं आएगी।
2. जालन्धर में स्वामी जी के उपदेश के बाद सरदार विक्रमसिंह ने कहा ब्रह्मचर्य में बल होता है। स्वामी जी इसका कोई प्रमाण है। जब विक्रमसिंह जाने लगा और अपने दो घोड़ों की बग्घी में बैठ गया तब पीछे से स्वामी जी ने बग्घी को पकड़ लिया। घोड़ों को कोड़े मारने पर भी बग्घी हिल न सकीं तब पीछे मुड़कर देखा और विक्रमसिंह ने प्रभावित होकर स्वामी जी को प्रणाम किया।
3. एक दिन स्वामी जी को मूर्ख बनाने के लिए कुछ लोगों ने प्रश्न किया स्वामी जी आप ज्ञानी हैं या अज्ञानी हैं? स्वामी जी ने कहा-मैं वेद आदि शास्त्रों में ज्ञानी हूं और फारसी, अरबी, अंग्रेजी में अज्ञानी हूं। यह उत्तर सुनकर प्रश्नकर्त्ता मूक हो गए।
4. एक पादरी ने स्वामी से पूछा, वेदों में पशुबलि का कही वर्णन नहीं है। अश्वमेघ का क्या अर्थ है? स्वामी जी ने कहा कि वेदों में पशुबलि का कहीं वर्णन नहीं है अश्वमेघ का अर्थ है न्यायपूर्वक प्रजा का पालन कराना और गोमेध यज्ञ का अर्थ है अन्न उत्पन्न करना, इन्द्रियों को वश में रखना।
5. एक दिन दो उच्च राजकर्मचारी स्वामी जी से मिलने आए और प्रसंगवश बोले, स्वामी जी खण्डन में क्या रखा है? इससे लोग भड़कते हैं। हम तो किसी कर्म में लाभ हो उसको अच्छा सझते हैं। परोपकार की बात व्यर्थ है। स्वामी जी ने उत्तर दिया, यदि अपना भला करना ही उद्देश्य है तो मनुष्यता क्या हुई? अपने भले का भाव तो गधे में भी पाया जाता है। परोपकार और परहित का नाम ही तो मनुष्यता है।
6. स्वामी जी के वचनों में कुछ ऐसी तासीर थी कि तत्काल इंजेक्शन का प्रभाव करते थे। अमीचन्द से तो इतना ही कहा था कि तुम हो तो हीरे पर कीचड़ में पड़े हुए हो बस अमीचन्द का जीवन सुधर गया। एक रघुनाथ मन्दिर का पुजारी स्वामी जी के पास आया स्वामी जी ने उससे पुजारी शब्द का अर्थ पूछा तो वह चुप रहा बता न सका। तब स्वामी जी ने कहा पूजा का अरि अर्थात् शत्रु है। आप पण्डित होकर ऐसे नाम क्यों रखते हो?
7. अमृतसर में स्वामी जी के व्याख्यानों में विघन डालने के लिए पंडित पुजारियों ने ईंट पत्थर बरसाये। इस काम के लिए छोटे बच्चों को तैयार किया गया। भक्तजनों को बहुत बुरा लगा और उन्हें पकड़ना शुरू किया तो सब भाग गये, कुछ बच्चे पकड़े गये बच्चों ने रोते हुए बताया, हमें लड्डू देने को कहा था। उसी समय लड्डू मंगवाए और बच्चों को समझाते हुए लड्डू दिए गए।
8. स्वामी जी के शब्दों में ''मैंने आर्य समाज का उद्यान लगाया है इसमें मेरी अवस्था एक माली जैसी है। पौधों में खाद डालते समय राख मिट्टी माली के सिर पर पड़ जाया करती है। मुझ पर धूल राख चाहे जितनी पड़े, मुझे इसका कुछ भी ध्यान नहीं। परन्तु वाटिका हरी भरी बनी रहे और निर्विघ्न फले फूले।

डी.ए.वी. के प्रधान श्री पूनम सूरी को बधाई

डी.ए.वी प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली का निर्वाचन गत् 18 फरवरी 2012 को सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री पूनम सूरी-प्रधान, डॉ. एस.के. सामा-उप प्रधान, श्री राधे श्याम शर्मा-महामंत्री, श्री रविन्द्र कुमार-मंत्री, श्री महेश चोपड़ा-कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से नवनिर्वाचित अधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। आशा है नई टीम के नेतृत्व में डी.ए.वी. विद्यालयों में महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार का काम और तीव्र गति से होगा।

-डॉ. अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष

होली पर हास्य काव्य गोष्ठी 8 मार्च को

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् एवं मित्र संगम पत्रिका के तत्वावधान में गुरुवार दिनांक 8 मार्च 2012 को दोपहर 3 बजे से 6 बजे तक आर्य कुमार सभा लाइब्रेरी, आर्य समाज विजय नगर, डबल स्टोरी, दिल्ली-9 में होली मंगल मिलन व हास्य काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया है। आप सभी सह परिवार सादर आमंत्रित है।

-ओम सपरा, संयोजक, मो. 9818180932

रोजड़ में योग प्रशिक्षण शिविर

पूज्य स्वामी सत्यपति जी की अध्यक्षता में वानप्रस्थ साधक आश्रम आर्यवन रोजड़, गुजरात में दिनांक 25 मार्च से 1 अप्रैल 2012 तक योग प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जा रहा है। इच्छुक आर्य जन सम्पर्क करें :- जशुभाई पटेल, व्यवस्थापक फोन 02770-287417, 291555 मो. 9427059550

आनन्द धाम हरिद्वार में योग साधना शिविर

पूज्य आचार्य अखिलेश्वर जी के सानिध्य में दिनांक 11 अप्रैल से 15 अप्रैल 2012 तक योग साधना शिविर, वैदिक योग आश्रम, आनन्दधाम, हरिपुर कला, हरिद्वार में लगाया जा रहा है। इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करें :- सुवर्णा भारद्वाज, मो. 9313989311

व्यास आश्रम हरिद्वार का वार्षिकोत्सव

व्यास आश्रम सप्तसरोवर मार्ग, भूपतवाला, हरिद्वार का वार्षिकोत्सव दिनांक 1 अप्रैल से 5 अप्रैल 2012 तक सौल्लास मनाया जा रहा है। इच्छुक व्यक्ति अविलम्ब सूचना देवे :- माता विमला गुप्ता मो. 09997490252 फोन 01334-218330

आर्य समाज कालका जी में ''यज्ञशाला'' का भव्य उद्घाटन सम्पन्न

रविवार 26 फरवरी 2012 दक्षिण दिल्ली की प्रमुख आर्य समाज कालकाजी, नई दिल्ली में सुन्दर व भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। मुख्य यजमान के रूप में श्री सी.पी. खन्ना, श्रीमती प्रभा सेठी, श्रीमती रानी आनन्द आदि विद्यमान थे। प्रबन्ध व्यवस्था प्रधान श्री रामचन्द्र कपूर, रविन्द्र मुंजाल, सुधीर मदान, राकेश भटनागर, प्रेम नरूला, वेद प्रभा बरेजा आदि कर रहे थे।

उपरोक्त अवसर पर समाज के मंत्री श्री रमेश गाडी को स्मृति चिन्ह से सम्मानित करते डॉ. अनिल आर्य व श्री राकेश भटनागर/ द्वितीय चित्र में मंच पर यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य आशीष कुमार सिद्धान्ताचार्य व साथ में आचार्य वीरेन्द्र कुमार, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती व डॉ. अनिल आर्य। समारोह का कुशल संचालन मंत्री श्री रमेश गाडी ने किया व डॉ. महेश विद्यालंकार का उद्बोधन हुआ।

आचार्य वीरेन्द्र विक्रम व श्री प्रवीन आर्य की कर्मठता का भव्य अभिनन्दन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा स्वामी दयानन्द जन्मोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में युवा विद्वान आचार्य वीरेन्द्र विक्रम का अभिनन्दन करते डॉ. अनिल आर्य, स्वामी वेदानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, स्वामी सौम्यानन्द जी, महेन्द भाई जी। द्वितीय चित्र में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के उत्तरप्रदेश के प्रान्तीय महामंत्री श्री प्रवीन आर्य का अभिनन्दन करते श्री सुरेश आर्य, डॉ. अनिल आर्य व स्वामी आर्यवेश जी, तदर्थ बधाई।

आर्य समाज रमेश नगर का उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज रमेश नगर, नई दिल्ली का उत्सव 16 फरवरी से 19 फरवरी 2012 तक सौल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री नरेन्द्र आर्य सुमन के मधुर भजन व आचार्य इन्द्र देव जी के वेद प्रवचन हुए। यज्ञ के ब्रह्मा पं. देवेन्द्र शास्त्री ने यज्ञ करवाया। परिषद् अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य, विधायक श्री सुभाष सचदेवा, पार्षद श्रीमती उषा मेहता, श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा, श्री हीरालाल चावला, श्री जगदीश आर्य, श्रीमती शशिप्रभा आर्या ने भी पधारकर अपनी शुभकामनाएं दी। श्री सत्यपाल नारंग (मंत्री) व श्री नरेन्द्र ढींगडा, श्री अरूण जोशी, श्री नरेश विग, सुरेश विग आदि के पुरूषार्थ से कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज पलवल द्वारा स्वेटर व कम्बल वितरण

आर्य समाज जवाहर नगर पलवल के प्रधान श्री जयप्रकाश आर्य ने अपनी टीम के साथ रात्रि के समय ठिठुरती सर्दी में रेलवे स्टेशन, बस अड्डा, कमेटी चौक, ताऊ देवीलाल पार्क जाकर निर्धन व बेसहारा लोगों में कम्बल वितरण किये। वैदिक माध्यमिक विद्यालय तथा रेलवे कालोनी स्थित विद्यालयों ने स्वेटर भी जरूरत मन्द छात्रों को दी गई। इस कार्य में श्री सुनील जी मलिक अभिनन्दन वैन्कट हाल, श्री किशुन चन्द (सूर्य एग्रो), श्री सेठ गोपाल दास पाहूजा हसनपुरवाले, श्री ज्ञानचन्द जी नरूला ने सहयोग प्रदान कर पुण्य अर्जित किया। वितरण कार्य में सहयोगी टीम में श्री सतीश आर्य, श्री रमेश अरोड़ा, श्री इन्द्रसेन कथूरिया तथा सुधाकर आर्य ने भाग लिया।

चुनाव समाचार

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, उधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड) का सर्वसम्मति से निर्वाचन सम्पन्न डॉ. विश्वमित्र शास्त्री-**प्रधान,** श्री विनीत कुमार-**मंत्री,** श्री सुभाष चन्द्र आर्य-**कोषाध्यक्ष** चुने गये। तदर्थ बधाई।

आर्य समाज सान्ताक्रुज का 68वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज सान्ताक्रुज का 68वां वार्षिकोत्सव गुरुवार दिनांक 26 जनवरी से रविवार 29 जनवरी 2012 तक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। यजुर्वेदी यज्ञ का आयोजन किया गया जिसके ब्रह्मा प्रो. ज्वलन्तकुमार शास्त्री जी (अमेठी, उ.प्र.)थे। सहारनपुर से पधारे पं. अभयराम शर्मा दयानन्दी भजनोपदेशक के रूप में उपस्थित थे। दिनांक 27 जनवरी 2012 को मध्याह्न 2.30 से 6.00 बजे तक आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन आर्य समाज की महिला संयोजिका श्रीमती शिवराजवती आर्या ने किया। रविवार दिनांक 29 जनवरी 2012 को प्रातः यजुर्वेदीय यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। समारोह की अध्यक्षता श्री चन्दगुप्त आर्य, प्रधान आर्य समाज सान्ताक्रुज ने की। वेदोपदेशक पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता पं. अभयराम दयानन्दी (सहारनपुर) का संक्षिप्त जीवन परिचय श्री रमेश आर्य ने दिया। आपको सम्मान स्वरूप 21000/- रुपये का चेक स्मृति चिन्ह शॉल, श्रीफल, मोतीमाला से सम्मानित किया गया। विशिष्ट वेदांग पुरस्कार प्राप्तकर्ता प्रो. प्रशस्यमित्र शास्त्री (रायबरेली) का संक्षिप्त जीवन परिचय डॉ. सोमदेव शास्त्री ने दिया। उन्हें विशिष्ट वेदांग पुरस्कार 21000/- रुपये का चेक, स्मृति चिन्ह, शॉल, श्रीफल, मोतीमाला से सम्मानित किया गया। स्व. आचार्य भद्रसेन युवा वैदिक विद्वान पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता प्रो. विनय विद्यालंकार जी (नैनीताल) को पुरस्कार स्वरूप 15001/- रुपये का चेक स्मृति चिन्ह, शॉल, श्रीफल व मोतीमाला से सम्मानित किया गया। वेदवेदांग पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता प्रो. ज्वलंन्त कुमार शास्त्री (अमेठी) का जीवन परिचय डॉ. सोमदेव शास्त्री जी ने दिया। उन्हें वेदवेदांग पुरस्कार स्वरूप 31000/- रुपये का चेक स्मृति चिन्ह, शॉल, श्रीफल व मोतीमाला से सम्मानित किया गया।

आर्य समाज सान्ताक्रुज ट्रस्ट के मंत्री श्री राजन बाहरी द्वारा प्रकाशित आर्य समाज सान्ताक्रुज द्वारा कुछ विशेष सेवाओं का विशेष परिपत्र का विमोचन पं. अभयराम दयानन्दी ने किया।

शोक समाचार

1. श्रीमती कमला डावर (भाभी श्री जितेन्द्र डावर) का गत 26 फरवरी 2012 को निधन हो गया।
2. आर्य नेता, पत्रकार श्री अजय भल्ला का गत 27 फरवरी 2012 दिनों निधन हो गया
3. परिषद् के शिक्षक श्री सत्यपाल शास्त्री फरीदाबाद की पूज्य माता श्रीमती हरचन्दी देवी का गत् 20 फरवरी 2012 को निधन हो गया।
4. आर्य समाज पश्चिमपुरी दिल्ली के पूर्व प्रधान श्री वेदप्रकाश मल्होत्रा की धर्मपत्नी श्रीमती मीना मल्होत्रा का गत 27 फरवरी 2012 को निधन हो गया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मयंक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548504 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9910649696, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970